''प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति एक अध्ययन''

इतिहास में पीएच.डी उपाधि हेतु
शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका
JV'n डॉ. गीता सिंह

शोधार्थी
JV'n सुमन चौधरी

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, भारत
अगस्त 2012

पृष्ठभूमि :–

प्राचीन समय में नारी की स्थिति के बारे में वर्तमान भारतीय समाज के लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं है। क्योंकि प्राचीन भारत में नारी की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति पर बहुत कम शोध हुआ है। प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति कैसी थी इस पर विद्वानों में मतभेद है। नारीयों की स्थिति के बारे में साहित्य भी कम ही उपलब्ध हैं और इन गिनी चुनी पुस्तकों में विषय से संबंधित विवरण संक्षिप्त रूप में उपलब्ध है। डा. लता सिंघल ने अपनी पुस्तक ''भारतीय संस्कृति में नारी'' में नारी की स्थिति का सटीक चित्रण किया है।

किसी भी देश, काल, समाज के निर्माण में नारी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परन्तु सदियों से हमारे समाज में नारी को दूसरा दर्जा प्राप्त है, यह दलील दी जाती रही है कि स्त्रियाँ सभी देश काल में पुरूषों के अधीन रही हैं इसका मूलाधार जैविक है।

विभिन्न समीक्षात्मक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि सामुदायिक संगठनों का स्वरूप चाहे पितृवंशिक रहा या मातृवंशिक आरम्भ में स्त्री पुरूष संबंध पारस्परिकता और अपने–अपने क्षेत्रों में स्वायत्ता पर आधारित थे, परवशता पर नहीं। साथ ही यह बात भी अब लगभग सर्वमान्य है कि मातृवंशिक समुदायों में स्त्रियों को अधिक स्वायत्ता और स्वतंत्र अधिकार हासिल थे, जैसे–जैसे सामाजिक विषमता बढ़ी और निजी सम्पत्ति का विकास हुआ, वास्तविक सत्ता पुरूषों के हाथ में आ गई। पुरूष प्रधान समाज में सारे कायदे कानून पुरूषों ने अपने हितों, अधिकारों और सुविधाओं को ध्यान में रख कर बनाए।

हालांकि परोक्ष रूप से तो नारी को बराबर के अधिकार दिये गए, देवी का दर्जा दिया गया लेकिन वास्तविक रूप में तो सारे अधिकार गौण रूप में ही प्राप्त हैं। यदि प्राचीन समय से पूर्व मध्य युग तक देखें तो भारतीय समाज में नारी को बहुत उच्च दर्जा प्राप्त था। पूर्ण सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक अधिकार प्राप्त थे। लेकिन मुगलों के आगमन के साथ ही नारी की स्थिति में गिरावट आती चली गई, नारी घर में कैद होती गई, नारी के अधिकार व स्वतंत्रता छिनती चली गई।

प्राचीन भारतीय समाज को पूर्णरूप से समझने के लिए विभिन्न कालों में स्त्रियों की सामाजिक आर्थिक, धार्मिक स्थितियों को जानना जरूरी है। समाज के इस आधे अंग (स्त्री) की स्थिति विभिन्न कालों में इस प्रकार है।

प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

अति प्राचीन काल में भारतीय समाज में स्त्रियों को आदर व सम्मान प्राप्त था। स्त्री–पुरूष में कोई भेद नहीं था। दोनों की सामाजिक परिस्थितियाँ समान थी तथा प्रत्येक सामाजिक धार्मिक कार्यों में उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी। लड़कियाँ ब्रह्मचर्य का पालन करती थी। आश्रम में शिक्षा प्राप्त करती थी। सह शिक्षा का अधिकार था। अध्ययन के पश्चात् कुछ स्त्रियाँ अध्यापन कार्य करती थीं। उपनिषदों में स्त्री शिक्षिकाओं का वर्णन है। शिक्षिकाओं को ''उपाध्याया'' कहा जाता था। परन्तु शिक्षिकाओं की संख्या अधिक नहीं थी। डॉ. अल्तेकर पोजिशन ऑफ वूमन इन हिन्दू सिविलाइजेशन पृष्ठ सं. 14.

वैदिक काल में स्त्रियां बुद्धि व शिक्षा में अग्रणी थी। यजुर्वेद के अनुसार इस काल में कन्या का उपनयन संस्कार होता था। उसे सन्ध्या करने का अधिकार था। रामायण में विवरण है कि सीता नियमित रूप से संध्या पाठ करती थी। जिसे डॉ. अल्तेकर ने पोजिशन ऑफ वूमन इन हिन्दू सिविलाइजेशन पृष्ठ सं. 11 में वैदिक मंत्रों का पाठ माना है। वे तर्क शास्त्र व वाद–विवादों में पारंगत थी। इस काल में सुलभा, गार्गी, मैत्रयी आदि के नाम अविस्मरणीय हैं।

VEDIC EDUCATION -GURUKULA SYSTEM OF EDUCATION

रोमशा, उवर्शी, घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, इत्यादि कवियित्रियां भी काफी लोकप्रिय थीं।

लड़कियों का विवाह युवावस्था में होता था, वे अपना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र थी। महाकाव्यों में इसका वर्णन है। उदाहरण के लिए :– (i) रामायण का सीता स्वयंवर, (ii) महाभारत में द्रोपदी स्वयंवर।

इस काल में नारी को कन्या के रूप में सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त था। पत्नी को सम्पत्ति की देवी कहा जाता था। विधवा का सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं था। पत्नि का अपने परिवार में सम्मान था।

प्राचीन युग में भारत की स्त्रियों को शिक्षा व यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त था। प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्यों में स्त्रियों की उपस्थिति अनिवार्य थी। उस समय नियोग प्रथा बहुप्रचलित थी। स्त्री सन्तान उत्पन्न न होने पर या अच्छी सन्तान के लिए नियोग कर सन्तान प्राप्त कर सकती थी। विधवा को पुनः विवाह करने का अधिकार था। वैदिक युग में विधवा को पुनर्विवाह प्रचलित था, दूसरा समाज में नियोग प्रथा भी प्रचलित थी। जिसके द्वारा विधवा पुत्र की प्राप्ति कर सकती थी। डॉ. अल्तेकर पोजिशन ऑफ वूमन इन हिन्दू सिविलाइजेशन पृष्ठ सं. 174, 179. पर्दा प्रथा का नामोनिशान नहीं था। स्त्रियों को उपहार में संपत्ति प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। समाज में एक विवाह प्रथा प्रचलित थी। इस काल में स्त्रियों को सामाजिक धार्मिक व राजनीति आदि के क्षेत्रों में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त थे।

उत्तर वैदिक व महाकाव्य काल में स्त्रियों के साथ भेदभाव की स्थिति में परिवर्तन आने लगा। उनकी धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थितियों पर प्रतिबंध लगने लगा। उन्हें वेद पढ़ने व मंत्रोचारण के उपयुक्त नहीं समझा गया।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यते तत्र देवता अद्यति''

(जहां स्त्रियों को पूजा जाता है वहां देवता निवास करते हैं)

डॉ. एस. अल्तेकर ''पोजिशन ऑफ वूमन इन एनसियेन्ट इण्डिया'' पृष्ठ सं. 4, 5.

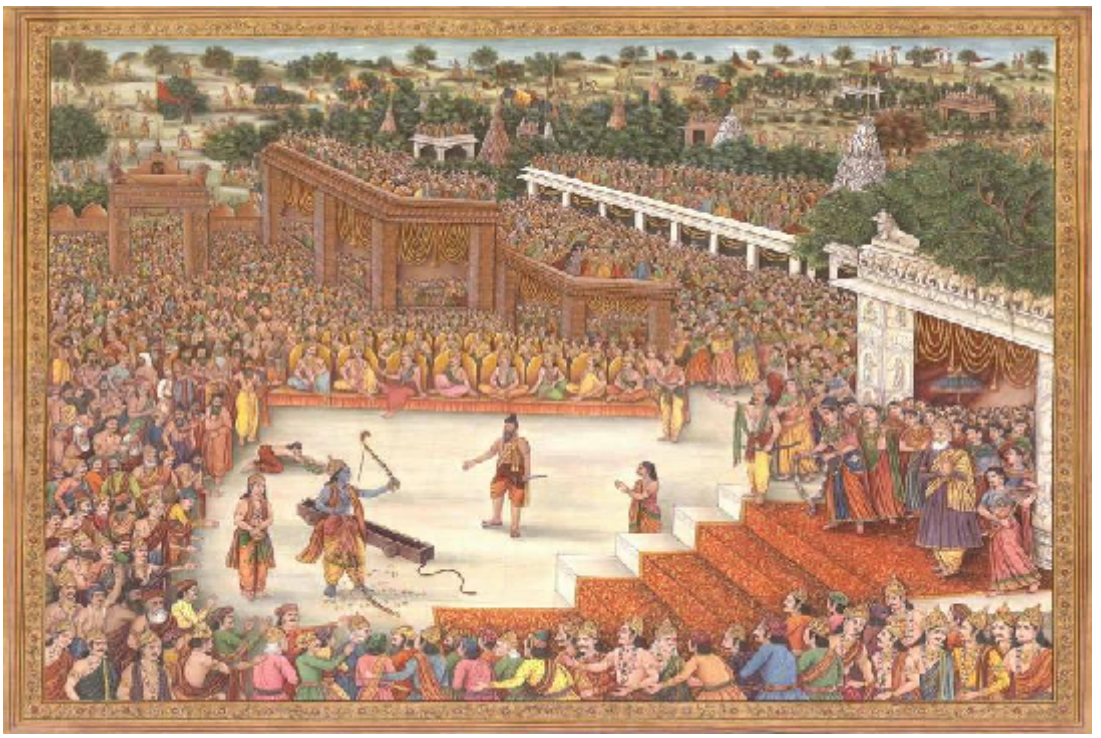

SITA SWAYAMVAR

उनकी यह धारणा उत्तर वैदिक काल में व्यवहारिक नहीं लग रही थी। हिन्दु समाज में पुत्री होने पर पुत्र के समान स्वागत नहीं किया जाता क्योंकि वह धार्मिक कार्यों के उपयुक्त नहीं थी।

स्त्रियों को जन्म से मृत्यु तक पिता, भाई व पति के अधीन बना दिया गया। लड़की का जन्म परिवार के लिए समस्या बन गया और उसका जन्म अभिशाप माना जाने लगा। विवाह के पश्चात् उससे गृहस्थी की सारी जिम्मेदारियां अच्छी तरह निभाने की अपेक्षा की जाती थी।

स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देना बंद कर दिया गया था। परन्तु कुछ पदों पर स्त्रियों के पदासीन होने के संकेत मिले हैं। प्राचीन ग्रंथों में कहीं–कहीं स्त्रियों के धार्मिक शिक्षक होने का जिक्र है। कुछ स्त्रियों द्वारा संगीत, नृत्य, चित्रकला, आदि की शिक्षा प्राप्त करने का भी उल्लेख है। शिक्षा की कमी थी कारण बाल विवाह प्रचलन में आए।

गुप्त काल व उसके बाद के समय में विवाह की आयु 12 वर्ष स्वीकृत हो गई थी। विवाह की आयु पुरूष के लिए 16 वर्ष व कन्या के लिए 12 वर्ष थी। प्राचीन इतिहास में कई प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है। सर्वश्रेष्ठ विवाह वह होता था जो माता–पिता की इच्छा व आज्ञा से होता था। स्वयंवर प्रथा अपनी लोकप्रियता खोती जा रही थी।

ए.एस. अल्तेकर के अनुसार आर्य गृह में अनार्य नारी का प्रवेश स्त्रियों की अवनति का मुख्य कारण था। वयस्क विवाह केवल राज परिवार तक सीमित था। आम लोगों में बाल–विवाह प्रचलित था।

हिन्दु विवाह की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि विवाह संबंध मृत्यु तक कायम रहता था। तलाक के लिए समाज में कोई स्थान नहीं था। समाज के निम्न व अतिनिम्न वर्ग की स्त्रियां शिक्षा से दूर थीं। स्त्रियों को परतंत्र, पराधीन, निस्सहाय, निर्बल बना दिया गया। वर के चुनाव में कन्या की भूमिका समाप्त हो गई थी। बहुपत्नि विवाह होने लगे। विधुर 8 या 10 कन्याओं से विवाह करने लगा। विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी। विवाह के बाद सती होना सर्वश्रेष्ठ आदर्श बनाने का प्रयास माना गया। इसके बाद धर्मशास्त्र काल में समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में पतन प्रारम्भ हो गया था। प्राचीन काल के गौरवमयी समाज निर्माण का श्रेय नारियों को दिया जाता है।

प्राचीन भारत में नारी की आर्थिक स्थिति

उस समय की अर्थव्यवस्था में भी नारी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। गृहकार्यों से लेकर कृषि, प्रशासन एवं यज्ञ कर्म से लेकर आध्यात्म साधना तक के क्षेत्र उनके विशिष्ट व्यक्तित्व प्रतिभा एवं कौशल की छाप से अछूते नहीं थे। अर्थव्यवस्था में भी नारी की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

वैदिक काल में अवयस्क कन्या को सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त नहीं था। परिवार में वह दत्तक पुत्र से श्रेष्ठ मानी जाती थी। मनु के अनुसार भाई अपने–अपने भाग का चतुर्थ भाग अविवाहित बहनों को देते थे और उनका विवाह संस्कार करते थे। विवाह के व्यय को ध्यान मं रखते हुए नारद ने कहा, कि यदि पिता अपने जीवन काल में सम्पत्ति का विभाजन करे तो अविवाहित कन्याओं को उनका भाग मिलना चाहिए। प्राचीन काल में विवाहित नारियों को सम्पत्ति के अधिकार प्राप्त थे, किन्तु अविवाहित नारियों को सम्पत्ति का उत्तराधिकारी नहीं माना गया था। पुत्र विहीन परिवारों में पिता की मृत्यु के उपरान्त सम्पत्ति का पूर्ण अधिकार उसकी लड़की/लड़कियों का हो जाता था। डॉ. पी.वी. काणे के अनुसार, ''कात्यायन स्मृति सारोद्वार'' :– पत्नी की अपनी कोई सम्पत्ति नहीं होती। वह जो उपार्जित करती है वह उसके पति का होता है। धर्मशास्त्र के अनुसार पत्नि–पति की अर्द्धांगिनी होती है। उनका संबंध अविच्छेद है अतः विधवा को पति की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी मानना चाहिए। स्त्री पति की सम्पत्ति का मृत्युपर्यन्त उपभोग कर सकती है किन्तु उसे सम्पत्ति को दान विक्रय और गिरवी रखने का अधिकार प्राप्त नहीं था।

नारी की कुछ ऐसी सम्पत्ति भी होती है जिस पर केवल उसी का व्यक्तिगत अधिकार होता है। इसे वह अपनी इच्छानुसार व्यय भी कर सकती थी। पिता, माता, पति, भाई द्वारा दिया गया धन, विवाह में प्राप्त उपहार, आभूषण अग्नि के समक्ष प्राप्त घन स्त्रीधन कहा जाता था। स्त्रीधन को उसके जीवित रहते कोई नहीं ले सकता था। ना ही उसकी इच्छा के विरूद्ध उसका उपयोग कर सकता था। स्त्रीधन का उपयोग पति आपात काल में ही कर सकता था।

WOMEN AGRICULTURE WORKERS IN PADDY FIELDS, INDIA

प्राचीन काल में आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि था। नारी कृषि व श्रम के कार्यों में पर्याप्त रूचि लेती थी। नारियां अपने गृह कार्य – खाना बनाना, बर्तन साफ करना, घर की सफाई करना आदि के साथ–साथ, कृषि व बाजार के कार्यों में पति की सहायता करती थी। दूध–दही के विक्रय करने से उसकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति सुदृढ़ होती थी। गणिकायें व देवदासियां भी समाज का एक अंग थी। ये संगीत, नृत्य, श्रंगार, गायन आदि में कुशल होती थी। नृत्य–संगीत इनकी स्वतन्त्र जीविका के साधन थे। ये देव मन्दिर या राजधानी में निवास करती थी। अपनी कलाओं से राजा व राज्य के धनवान व्यक्तियों में अपना स्थान बना लेती थी। पुरूष अपनी शक्ति के अनुरूप धन लेकर इनके पास जाया करते थे। गणिकायें केवल भोग–विलास व मनोरंजन की सामग्री मात्र नहीं थी वरन् वे राज्यों में युद्ध के भेदीये जैसे दुष्कर कार्यों के लिए भी नियुक्त

की जाती थी। गणिकाओं को समाज में तिरस्कृत दृष्टि से नहीं देखा जाता था। इस कार्य से प्राप्त आय का एक भाग राज्य को कर के रूप में देती थी।

दास–दासियां समाज में आवश्यक अंग के रूप में विद्यमान थे। नारी को दासी बनाकर रखना प्रभुत्व का प्रतीक माना जाता था। ये अधिकतर श्रम प्रधान कार्य करती थी। दासियां अपने स्वामी को सेवा के लिए हर क्षण उनके अधीन रहती थी।

दासियों से बलपूर्वक श्रम करवाकर उनकी मजदूरी का उपभोग स्वामी करता था। नारियों द्वारा सूत कातना व वस्त्र बुनने का भी उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त भी नारियां कई कार्य करती थी जिनसे परिवार व समाज की आर्थिक स्थिति पर सीधा असर पड़ता था।

प्राचीन भारत में नारी के योगदान विषय पर उपलब्ध गिनी चुनी पुस्तकों में नारी की सामाजिक व आर्थिक योगदान विषय की जानकारी बहुत सीमित रूप में दी गई है। अतः नारी के सामाजिक व आर्थिक, पक्ष को अधिक प्रभावी व ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए मैंने इस विषय का चुना है।

भारत जैसे प्राचीन देश की सभ्यता संस्कृति, समाज के निर्माण में व अर्थव्यवस्था में उस समय की नारी के योगदान को उजागर करना आधुनिक समाज के लिए भी प्रेरणा दायक रहेगा।

विषय एवं अध्ययन क्षेत्र :–

विषय :– ''प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन''

अध्ययन क्षेत्र :– आज की नारियों को प्राचीन भारतीय नारियों की उन्नत स्थिति से अवगत करवा कर और अधिक जागरूक करने के लिए ''प्राचीन भारतीय समाज में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति'' को मैंने अपने शोध के विषय के रूप में चुना। प्राचीन समय में महिलाओं को समाज के हर क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त था और उन्हें बराबरी का दर्जा प्राप्त था। वैदिक ग्रन्थों से स्पष्ट होता है कि नारियों को शिक्षा, यज्ञ, ज्ञान प्राप्ति आध्यात्म आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रता व समानता प्राप्त थी। गृहकार्य से लेकर कृषि, प्रशासन, यज्ञ से लेकर आध्यात्म साधना तक के क्षेत्र भी उनसे अछूते नहीं थे।

स्त्री व पुरूष में कोई भेद नहीं था। दोनों की सामाजिक परिस्थिति समान थी। आश्रम में रहती थी, सह शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। वे तर्कशास्त्र व वाद–विवादों में पारंगत थी। विवाह युवावस्था में होता था अपना जीवनसाथी चुनने के लिए स्वतंत्र थी।

विवाह के पश्चात् ससुराल में वधु का राज चलता था। गृहकार्यों के अतिरिक्त परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कृषि, पशुपालन, दूध–दही बेचना, सूत कातना आदि कार्य करती थी। पैतृक संपत्ति में कुछ अधिकार प्राप्त थे। स्त्रीधन पर महिला का अधिकार होता था। लेकिन मध्य काल तक आते–आते स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आती गयी इसके पीछे क्या कारण थे? समाज में अनेक कूप्रथायें प्रचलित थीं – पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, सती प्रथा आदि महिलाओं को इन प्रथाओं से गुजरना पड़ता था। इन सब स्थितियों से आज की नारी को अवगत करवाने हेतु मैंने इस विषय को अपने शोध के विषय के रूप में चुना है। क्योंकि महिलाओं के उत्थान के बिना किसी भी समाज की उन्नति के बारे में सोचना व्यर्थ है।

उद्देश्य :–

1. प्राचीन भारत में महिलाओं के सम्मान व स्थिति का अध्ययन करना।
2. प्राचीन काल से पूर्व मध्यकाल तक के समय में महिलाओं को शिक्षा, गृहकार्य, प्रशासन यज्ञ से लेकर आध्यात्म तक के अधिकार प्राप्त थे इनके बारे में अध्ययन करना।
3. परिवार व समाज की आर्थिक स्थिति में महिलाओं की क्या भूमिका थी व अपनी आर्थिक स्थिति को उन्नत करने के लिए वे क्या–क्या प्रयास व कार्य करती थी का अध्ययन करना।
4. समाज व परिवार के अर्थ (धन सम्पत्ति) में महिलाओं को क्या अधिकार प्राप्त थे इनका अध्ययन करना।

साहित्य का अवलोकन :–

1. डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्र ने अपनी पुस्तक ''प्राचीन भारत में नारी'' में नारी के विविध रूपों तथा वर्ग भिन्नता के आधार पर जीवन के आदर्शों व स्थितियों में भी भिन्नता थी। वर्गीकरण के आधार पर पूर्व मध्यकालीन भारत की नारी के संबंध में विवेचना की गई है उसके सामाजिक आर्थिक एवं न्यायिक परिपेक्ष्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। विवाहों के प्रकार गुण–दोष, दहेज, पुर्नविवाह आदि का विस्तृत विवेचन है। सामाजिक जीवन में नारी को दी जाने वाली सुविधाओं, स्थान, स्वतंत्रता, सुरक्षा आदि व्यवस्थाओं का सटीक वर्णन किया गया है। पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में नारी पर लगे निर्बन्धों के मूल में कार्य करने वाली भावनाओं तथा प्रवृतियों को जानने का भी प्रयास किया गया है।

2. डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार छठा संस्करण 1994 ने अपनी पुस्तक ''प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन'' में मनुष्य अपने सामूहिक जीवन को सुखी बनाने के लिए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक संस्थाओं, प्रथाओं को विकसित करते हैं। उन सब का समावेश किया गया है। प्राचीन भारत में विभिन्न प्राचीन जनपदों, राज्यों और कालों में सामाजिक व आर्थिक जीवन का निरूपण किया गया है। स्त्रियों की स्थिति, उत्तराधिकार, आदि पर भी विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

3. डॉ. पी.वी. काणे ने अपनी पुस्तक ''धर्मशास्त्र का इतिहास'' भाग 1 हिन्दी अनुवाद – में बताया है कि ब्रहस्पति स्मृति की रचना दूसरी व चौथी शताब्दी के मध्य हुई थी। इस स्मृति में व्यवहारभियोग के

स्तर, ऋणादान, स्त्रीधन, स्त्री द्वारा संग्रहण, स्त्रीपुंसधर्म जैसे विविध विषयों की जानकारी प्राप्त होती है।

4. डॉ. राजबली पाण्डे ने अपनी पुस्तक ''अशोक के अभिलेख'' 1965 पृष्ठ 188 पर सम्राट अशोक की रानी कारूवाकी द्वारा प्रजा के जनकल्याणार्थ किए गए कार्यों का विवरण दिया गया है। रानी कारूवाकी ने आम्रवाटिका, दानशाला, विश्रामगृह बनवाए। जिनमें भोजन व विश्राम के लिए स्थान उपलब्ध था।

5. डॉ. पी.वी. काणे द्वारा प्रकाशित ''कात्यायन स्मृति सारोद्वार'' इसमें कात्यायन ने व्यवहार के विषय में अनेक परिभाषाऐं प्रस्तुत की हैं। इसमें प्रीतिदत्त, शुल्क, सौदायिक नामक स्त्रीधन के प्रकारों का वर्णन किया गया है।

शोध प्रश्न :–

(1) प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति कैसी थी?

(2) समाज में विभिन्न वर्गों की महिलाओं को कौन–कौन से सामाजिक अधिकार प्राप्त थे?

(3) पैतृक संपत्ति में महिलाओं को क्या हक प्राप्त थे?

(4) प्राचीन भारत में जो महिलाओं की उन्नत स्थिति थी उसमें गिरावट कब आने लगी व उसके कारण क्या थे?

(5) वर्तमान में महिलाओं की स्थिति कैसी है? उनको सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में कौन से अधिकार प्राप्त हैं? आदि का अध्ययन।

शोध परिकल्पना :–

अपने अध्ययन काल में अपने गुरूजनों से व घर और समाज में अपने बड़ों से हमेशा यह सुनते आए हैं कि पहले के समय में औरतों को खूब अधिकार प्राप्त थे उनको समाज में बराबरी का व उच्च स्थान प्राप्त था जब से मुगलों ने भारत पर आक्रमण किया और शासन करने लगे तो महिलाओं को घर में कैद करके रखा जाने लगा। मुगलों के पतन के बाद महिलाओं की स्थिति में लगातार सुधार हो रहा है लेकिन अभी भी समाज में महिलाओं पर अनेक तरह की पाबंदियां है। समाज की इस धारणा या इन बातों में कितनी सच्चाई है जानकारी प्राप्त करने के लिए व उस जानकारी को आगे समाज तक पहुंचाने के लिए मैंने इस विषय को अपने शोध के लिए चुना है।

प्राचीन काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति कैसी थी उनको समाज में कितने अधिकार प्राप्त थे। समाज की उन्नति में उनका किस तरह का कितना योगदान था। आर्थिक रूप में उनको कितने अधिकार थे। सम्पत्ति पर उनका कितना हक था। अर्थव्यवस्था की उन्नति में उनका क्या योगदान था।

शोध पद्धति :–

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में ऐतिहासिक शोध पद्यति का प्रयोग किया जायेगा जो कि ऐतिहासिक व विकासात्मक अध्ययन से सम्बन्धित है जिसमें विभिन्न कारकों के मध्य संबंधों की व्याख्या एवं उनके मध्य गत्यात्मक क्रिया का प्रसंगवार विवेचन किया जायेगा। इस सन्दर्भ में

महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रयोग आवश्यक है। जिसके लिए जयपुर और उसके आसपास के जिलों में अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकालयों का सहयोग लिया जायेगा। अध्यन में ''प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति'' का अवलोकन करने के लिए प्राथमिक स्त्रोतों की सहायता ली जायेगी। यह अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं विकासात्मक प्रवृति का होगा। इस अध्ययन के दौरान सार्थक पुस्तकों, लेखों, रिपोर्ट, दस्तावेजों और अन्य स्त्रोतों की सहायता ली जायेगी, जिससे अध्ययन में समग्रता का समावेश होगा।

अपने शोध के लिए विषय की वस्तु को प्राचीन मूल ग्रंथों, वेद, पुराण, जातक कथाओं, टीकाओं, अभिलेखों आदि से प्राप्त किया जायेगा।

आधुनिक काल के विद्वानों द्वारा लिखित सहायक ग्रंथों से प्राप्त किया जायेगा। इसके लिए राजस्थान विश्वविद्यालय की सेन्ट्रल लाइब्रेरी से अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया जायेगा। अनेक पत्र–पत्रिकाओं, नेट, जरनलस आदि की सहायता ली जायेगी।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर से भी विषय से संबंधित सामग्री को एकत्रित किया जायेगा।

अध्ययन रूप रेखा :–

प्रस्तुत शोध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है :–

(i) प्रथम अध्याय – एतिहासिक पृष्ठभूमि

(ii) द्वितीय अध्याय – स्त्रोत सामग्री का परिचय

(iii) तृतीय अध्याय – प्राचीन भारत में नारी का योगदान

(iv) चतुर्थ अध्याय – प्राचीन भारत से मौर्यकाल तक में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति

(v) पंचम अध्याय – मौर्यकाल से गुप्त काल तक में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति।

(vi) षष्टम् अध्याय – गुप्त काल से पूर्व मध्य काल तक में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति

(vii) सप्तम् अध्याय – उपसंहार

(i) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

प्रथम अध्याय में प्राचीन काल से पूर्व मध्यकाल तक के समय में महिलाओं की स्थिति का विवेचन किया जायेगा तथा साथ ही तत्कालीन शासन व समाज का भी संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा।

(ii) स्त्रोत सामग्री का परिचय :–

विवेच्य काल की एतिहासिक स्त्रोत सामग्री का परिचय दिया गया है। इसमें वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, बोद्ध व जैन ग्रन्थ, एतिहासिक ग्रन्थ, व्याकरण ग्रन्थ, कालिदास द्वारा लिखित साहित्य निबंध, विदेशी यात्रियों के वृतांत तथा अभिलेखों का नारी संबंधी स्त्रोत सामग्री के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

(iii) प्राचीन भारत में नारी का योगदान :–

प्राचीन भारत में नारी के सामान्य योगदान के अन्तर्गत उसकी सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व राजनैतिक स्थिति के साथ अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाले सहायक कारकों पर प्रकाश डाला जायेगा।

(iv) प्राचीन भारत से मौर्यकाल तक में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति :–

इस अध्याय में प्राचीन काल से मौर्य काल तक के समय में नारी की समाज में स्थिति ''बेटी, बहन, पत्नि, मां, रानी, दासी'' समाज के विभिन्न वर्गों में नारी का स्थान तथा अर्थव्यवस्था में विभिन्न वर्गों की नारियों के योगदान का परिचय, नारी की सम्पत्ति अधिकार, स्त्रीधन, कृषि, पशुपालन, सूत कातना वस्त्र बनना आदि कार्यों द्वारा आर्थिक योगदान का विवेचन किया जायेगा।

(v) मौर्यकाल से गुप्त काल तक में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति :–

इस अध्याय में मौर्य काल से गुप्त काल तक में समाज के विभिन्न वर्गों में नारी की स्थिति व उसके द्वारा किए गए कार्यों द्वारा अर्थव्यवस्था में होने वाले सहयोग का अध्ययन किया जायेगा।

(vi) गुप्त काल से पूर्व मध्य काल तक में नारी की सामाजिक व आर्थिक स्थिति :–

पूर्व में नारी की स्थिति सामाजिक व आर्थिक रूप में कैसी थी। मध्यकाल आते–आते उसकी स्थिति में गिरावट प्रारम्भ हो गई थी। इसके कारण व प्रभाव आदि का अध्ययन किया जायेगा।

(vii) उपसंहार :–

सप्तम व अंतिम अध्याय में प्राचीन भारत में नारी की सामाजिक स्थिति, अर्थव्यवस्था में नारी के योगदान को दर्शाते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी थी समाज में नारी को बहुत अधिकार प्राप्त थे परन्तु उसके द्वारा सम्पादित कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन बहुत सीमित रूप में किया गया है जबकि श्रम का अधिकांश भाग नारियों द्वारा ही किया जाता था, का विवेचन किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) मैक्समूलर F. – ऋग्वेद सायण भाश्य सहित सम्पादक, 1890–92, 5 भाग वैदिक संशोधन मण्डल–पूना।

(2) ग्रिफिथ R.T.H. – अथर्ववेद द्वारा अनुवादित स्वाध्याय मण्डल– बनारस 1867

(3) ग्रिफिथ R.T.H. – यजुर्वेद द्वारा अनुवादित स्वाध्याय मण्डल– बनारस 1899

(6) स्वामी गोविन्द – बौद्धायन धर्मसूत्र के विवरण सहित Govt. ओरिएन्टल लाइब्रेरी सीरीज, मैसूर।

(7) शास्त्री श्याम – बौद्धायन ग्रहसूत्र Govt. ओरिएन्ट लाइब्रेरी सीरीज, मैसूर।

(8) हरदन्त – गौतम सूत्र की टीका सहित आनन्द आश्रम पूना।

(9) फयूहरर स. – वशिष्ठ धर्मसूत्र बम्बई संस्कृत सीरीज।

(10) डा. जाली सा. – विष्णु धर्म सूत्र कलकत्ता – 188

(11) भट्ट कुल्लुक – मनु स्मृति की टीका सहित, निर्णय सागर बम्बई।

(12) गोविन्दराम, मेघातिथि, सर्वज्ञनारायण राघवानन्द – मनुस्मिृति व अन्य टीका सहित सम्पादक विश्वनाथ मांडलिक।

(14) डा. पाली – नारद स्मृति कलकत्ता – 1885

(15) गायकवाड़ आपंगार रंगास्वामी सं. – ब्रहस्पति स्मृति ओरिएण्टल सीरीज बड़ौदा – 1941

(16) महाभारत (समस्त खण्ड) – गीता प्रेस गोरखपुर।

(17) श्रीमद्भागवत्, भागवत गीता – गीता प्रेस गोरखपुर।

(18) पद्मपुराण – आनन्दाश्रम प्रेस पूना।

(19) मत्स्य पुराण – आनन्दाश्रम प्रेस पूना।

(20) भगवत पुराण – निर्णय सागर प्रेस बम्बई।

(21) हरिवंश पुराण – स. भारतीय ज्ञान पीठ काशी – 1962

(22) आप्टे हरिनारायण सं. – अग्नि पुराण आनन्द आश्रम संस्कृत सीरीज पूना – 1900

(23) आप्टे हरिनारायण – वायु पुराण द्वारा प्रकाशित पूना – 1905

(24) कॉवेल E.B. – जातक स्टोरीज वॉल्यूम 5 लंदन 1957

(27) पाठक श्री जगन्नाथ – हर्षचरितम चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी।

(28) डा. मिश्र जगदीश चन्द्र – शुक्रनीति चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी – 1998

(29) सूरी अद्योतन – कुलवयमालाकहां – , अनुवाई गुजराती हेम सागर सूरी बम्बई – 1980

(30) गोस्वामी D.L. स. – कामसूत्र बनारस – 1928

(31) दयाल D.L. एण्ड शास्त्री R.A. सं. – काव्ययीनांसा GOS बड़ौदा–1934

(32) रानी C.H. – कथासरित सागर अंग्रेजी अनुवाद दो खण्ड कलकत्ता 1880–1884

(37) राजशेखर – कर्पूरमंजरी स्टेनकोनो, देहली 1964

(38) गोस्वामी डी.एल. सं. – कामसूत्र बनारस–1928

(39) गोडेकर जी.के. सोमेश्वर – मानसोल्लास जी.ओ.एस. प्रथम, द्वितीय खण्ड–1925–1929

(40) इसलामपुरकर वी.एस. सं. – नव साहसांकचरित बम्बई–1895

(41) ओझा गो.ही. व गुलेरी बी.एस. – पृथ्वीराज विजय अजमेर 1941

(42) पाण्डया वि. और श्यामदास – पृथ्वीराज रासो सम्पादक बनारस–1913

(43) शास्त्री श्री हरगोविन्द – नैशधमहाकाव्यम बनारस

(44) शास्त्री तेजराम स. – राजतरंगिणी वाराणसी – 1960

(45) क्षेमेन्द्र, दुर्गाप्रसाद स. – दश्मवतार चरित निर्णय सागर प्रेस, बम्बई।

(48) संदयाल एवं श्री गोन्देकर – लेख पद्धिति बडौदा – 1925

(49) द्विवेदी हजारी प्रसाद – प्रबन्ध चिंतामणी मेरूतुग, हिन्दी अनुवाद, सिंधी जैन ग्रन्थमाला।

(50) याकोबी एच. स. – समराईच्छकहां कलकत्ता–1926

(51) डा. शास्त्री छगन – समराईच्छकहां हरिभद्र प्रथम, द्वितीय खण्ड सम्पादन एवं अनुवादक बीकानेर–1976

(52) सूरी हरिभद, मोदी एम.सी. – समराईच्छकहां अहमदाबाद 1935–1936

(53) हरिभभद्र प. भगवानदास – समराईच्छकहां संस्कृत छाया अनुवाद सहित जैन सोसाइटी अहमदाबाद भाग–1 1938, भाग–2–1942

(54) धनपाल – तिलकमंजरी काव्यमान सीरीज बम्बई, 1938

(55) धनपाल – तिलकमंजरी निर्णय सागर प्रेस बम्बई–1903

(57) याकोबी एच. स. – उपमिति भवप्रपंच कलकत्ता–1899–1914

(59) नीलकण्ठ, काणे पी.वी. – व्यवहार मपूख द्वारा सम्पादित

(61) मित्रमिश्र – व्यवहार प्रकाश के वीर मित्रादय का भाग 1

(62) शास्त्री ईश्वरचन्द्र – युक्तिकल्पतरू भोज, सम्पादन, कलकत्ता ओरियन्टल सीरीज–1917

(63) जीमूतवाहनकृत – दायभाग कलकत्ता – 1893

(64) विज्ञानेश्वर – मिताक्षरा याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका, निर्णय सागर बम्बई

(65) विश्वरूप – याज्ञवल्क्य स्मृति पर बालक्रीडा टीका, त्रिवेन्द्रम संस्कृत सीरीज।

(66) रघुनन्दन – दायतत्व जीवानन्द का संस्करण

(67) भट्ट विश्वेश्वर – मदनपारिजात बिब्लियोथिक इंडिका

(68) भट्ट कमलाकर – निर्णय सिन्धु निर्णय सागर प्रेस बम्बई–1906

(69) पण्डित एस.पी. – रघुवंश तीन भाग बम्बई संस्कृत सीरीज–1869–74

(70) ऋतुसंहार – निर्णय सागर प्रेस बम्बई–1922

(71) कुमारसंभव – निर्णय सागर प्रेस बम्बई 1927

(72) मालविकानिमित्र

(73) डा. शास्त्री श्रीनिवास, भारतीय महेश चन्द्र – कादम्बरी द्वितीय संस्करण मेरठ–1969

(78) डा. त्रिपाठी जयशंकर लाल – मृच्छकटिकम वाराणसी

सहायक ग्रंथ सूची

(1) अग्रवाल वासुदेव शरण – हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन पटना–1953

(2) अग्रवाल वासुदेव शरण – पाणिनी कालीन भारतवर्ष बनारस 2012

(3) अग्निहोत्री प्रभुदयाल – पतंजली कालीन भारत पटना 1963

(4) पाण्डेय राजबली – अशोक के अभिलेख वाराणसी 1965

(5) पाण्डेय राजबली – विक्रमादित्य, वाराणसी–2016

(6) उपाध्याय रामजी – प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, इलाहाबाद–1966

(7) कर्वे इरावती – भारत में बन्धुत्व संगठन, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित–1973

(8) त्रिपाठी चन्द्रबली – भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, उत्तर प्रदेश–1967

(9) डा. सिंघल लता – भारतीय संस्कृति में नारी (स्मृति ग्रन्थों के विशेष संदर्भ में) दिल्ली 1991

(10) उपाध्याय बलदेव – वैदिक साहित्य और संस्कृति वाराणसी।

(11) आचार्य भावना – प्राचीन भारत में रूप श्रृंगार

(12) शर्मा मालती – वैदिक संहिताओं में नारी, वाराणसी – 1990

(13) गोयल प्रीतिप्रभा – भारतीय संस्कृति, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर

(14) अग्रवाल वासुदेव शरण – पाणीनी कालीन भारतवर्ष वाराणसी

(15) शर्मा गजानन – प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी इलाहाबाद–1971

(16) गुप्ता मंजुला – ब्राह्मण ग्रंथों में नारी, दिल्ली

(17) प्रसाद ओम प्रकाश – प्राचीन भारत का सामजिक एवं आर्थिक इतिहास

(18) शिवदत्तज्ञानी – वेद कालीन समाज वाराणसी

(19) रेउ विश्वेश्वरनाथ – ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिकसार, राजस्थान साहित्य संस्थान

(20) थापर रोमिला – प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास अनुवाद आदित्यनारायण सिंह दिल्ली 2001

(21) डा. त्रिवेदी कृष्ण कान्त – प्राचीन पाली साहित्य में भारतीय समाज

(22) वेदालंकार प्रशांत कुमार – वैदिक साहित्य में नारी दिल्ली

(23) शर्मा रामशरण – प्रारम्भिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास दिल्ली – 1992

(24) उपाध्याय वासुदेव – गुप्त अभिलेख, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1974

(25) झा द्विजेन्द्रनारायण – मौर्योतर तथा गुप्तकालीन राजस्व व्यवस्था दिल्ली

(26) राय उदयनारायण – गुप्त सम्राट और उनका काल

(27) राय उदयनारायण – प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन इलाहाबाद

(28) विद्यालंकार डा. निरूपण – भारतीय धर्मशास्त्रों में शुद्रों की स्थिति–1971

(29) पाण्डेय राजबली – प्राचीन भारत

(30) डा. मिश्र उर्मिला प्रकाश – प्राचीन भारत में नारी

(31) गुप्ता गायत्री – प्राचीन भारत में नारी की स्थिति – श्रीनिवास पब्लिकेशन 2012 (iii) 360P

(32) त्रिपाठी लाल कृष्ण – प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति खण्ड–2 बनारस हिंदू विश्व विद्यालय प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति और पुरातत्व विभाग 1992

(33) Agarwal Sushila (1988) – Status of Women Jaipur : Printwell Publications.

(34) Altekar A.S (1983) – Positio of Women in Hindu Civilization. Banars : The culture Publication House. Banaras Hindu University.

(35) Altekar, A.S. (1962) – Position of Women in Hindu Civilization (3rd Ed.) : The cultural Publication House. Banaras Hindu University.

(36) Apte, VST, (1961) Social & Economic Condition – Essay in History and Culture of Indian People Vol. 1, Banaras. The Culture Publication House.

(37) Badare, C. (1925) Women in Ancient India, London, Keganpaul.

(38) Baig, Tara Ali, (1988). Women of India Delhi. The Publication Division.

(39) Desh Pande, S.R. (1953). Economic Workers and Social Status of Women in India. New Delhi; Ministry of Labous.

(40) Devandra, Kiran (1985) status and position of women in India with special reference to women in contemporary India. New Delhi Shakti Books.

(41) Dutt, M.N. (1957) Status of women. Calcutta : Mohendra Publishing committee.

(42) Gulati, Saroj (1985) Women & Society. Northen Indian in 11th & 12th century. Delhi Chanakya Publications.

(43) Gupta, A.K. (Ed.) (1986) Women and Society, New Delhi, Criterion Publication.

(44) Jha, K.N. (1961), Women Towards Modernization, New Delhi, Janaki Prakashan.

(45) Kaur & Punia (2008), Women Today, Moscow : Progress Publishers.

(46) Kriahnasan Maithrevi (1987) Women and Society in India. New Delhi : Ajanta Publication.

(47) Saran, RAksha (1960) Status of Women Encyclopaedia of Social Work in India.

(48) Thomas, Paul (1964) Hindi Women through the Ages. Bombay : Asia Publishing House.

(49) Tikoo, Prithvinath (1985) – Indian Women – A Brief Socio cultural Survey, New Delhi, B.R. Publishing Corporation.

(50) Verma, H.N. and Verma A. (1976) Indian Women through Ages New Delhi; Great Indian Publishers.

(51) VEDIC EDUCATION -GURUKULA SYSTEM OF EDUCATION – http://educational-system.blogspot.in/2013/09/vedic-education -gurukula- system-of.html

(52) SITA SWAYAMVAR - http://www.yessy.com/ciagart/gallery. html? i=24141

(53) WOMEN AGRICULTURE WORKERS IN PADDY FIELDS, INDIA – http://www.alamy.com/stock-photo-women-agriculture-workers-in-paddy-fieldspalakadkeralaindiaasia-57894101.html